

“बिजनेस पोस्ट के अन्तर्गत डाक शुल्क के नगद भुगतान ( बिना डाक टिकट ) के प्रेषण हेतु अनुमत. क्रमांक जी.2-22-छत्तीसगढ़ गजट / 38 सि. से. भिलाई, दिनांक 30-05-2001.”



पंजीयन क्रमांक  
“छत्तीसगढ़/दुर्ग/09/2013-2015.”

# छत्तीसगढ़ राजपत्र

(असाधारण)

प्राधिकार से प्रकाशित

---

क्रमांक 400 ]

रायपुर, शुक्रवार, दिनांक 5 अक्टूबर 2018 — आश्विन 13, शक 1940

---

विधि और विधायी कार्य विभाग  
मंत्रालय, महानदी भवन, अटल नगर, रायपुर

अटल नगर, दिनांक 5 अक्टूबर 2018

क्रमांक 9855/डी. 184/21-अ/प्रारू./छ. ग./18. — छत्तीसगढ़ विधान सभा का निम्नलिखित अधिनियम जिस पर दिनांक 28-09-2018 को राज्यपाल की अनुमति प्राप्त हो चुकी है, एतद्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है.

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के नाम से तथा आदेशानुसार,  
टी. सी. त्रिपाठी, उप-सचिव.

## छत्तीसगढ़ अधिनियम (क्र. 25 सन् 2018)

### छत्तीसगढ़ माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018

**छत्तीसगढ़ माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 (क्र. 7 सन् 2017) को  
और संशोधित करने हेतु अधिनियम ।**

भारत गणराज्य के उनहत्तरवें वर्ष में छत्तीसगढ़ विधानमण्डल द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो :-

संक्षिप्त नाम एवं प्रारंभ.

1. (1) यह अधिनियम छत्तीसगढ़ माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 कहलायेगा ।
- (2) अन्यथा उपबोधित के सिवाय, इस अधिनियम के उपबंध उस तारीख से प्रवृत्त होंगे, जिसे राज्य सरकार राजपत्र में, अधिसूचना द्वारा, नियत करे :

परंतु इस अधिनियम के विभिन्न उपबंधों के लिए विभिन्न तारीखें नियत की जा सकेंगी और ऐसे किसी उपबंध में इस अधिनियम के प्रारंभ के प्रति किसी निर्देश का यह अर्थ लगाया जायेगा कि वह इस उपबंध के प्रवृत्त होने के प्रति निर्देश है ।

धारा 2 का संशोधन.

2. छत्तीसगढ़ माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 (क्र. 7 सन् 2017), (जो इसमें इसके पश्चात् मूल अधिनियम के रूप में निर्दिष्ट है), की धारा 2 में, -

(क) खंड (4) में, शब्द "अपील प्राधिकारी और अपील अधिकरण" के स्थान पर, शब्द, कोष्ठक और अंक "अपील प्राधिकारी, अपील अधिकरण और धारा 171 की उप-धारा (2) में निर्दिष्ट प्राधिकरण" प्रतिस्थापित किया जाये;

(ख) खंड (16) में शब्द "केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और सीमा शुल्क बोर्ड" के स्थान पर, शब्द "केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड" प्रतिस्थापित किया जाये;

(ग) खंड (17) में, उप-खंड (ज) के स्थान पर, निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाये, अर्थात्:-

"(ज) किसी घुड़दौड़ क्लब द्वारा योगक या अनुज्ञप्ति के माध्यम से बुक मेकर को सेवाएं या किसी अनुज्ञप्तिधारी बुक मेकर की ऐसे क्लब को सेवाएं; और"

(घ) खंड (18) का लोप किया जाये;

(ङ) खंड (35) में, शब्द, कोष्ठक और अक्षर "खंड (ग)" के स्थान पर, शब्द, कोष्ठक और अक्षर "खंड (ख)" प्रतिस्थापित किया जाये;

(च) खंड (69) में, उप-खंड (च) में, शब्द एवं अंक "अनुच्छेद 371" के पश्चात्, शब्द, अंक और अक्षर "और अनुच्छेद 371ज" अंतःस्थापित किया जाये;

(छ) खंड (102) के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाये, अर्थात् :-

"स्पष्टीकरण- शंकाओं के निवारण के लिए, एतद्वारा यह स्पष्ट किया जाता है कि अभिव्यक्ति "सेवा" में प्रतिभूतियों में संव्यवहारों को सरल बनाना या प्रबंध करना सम्मिलित है;"

3.

मूल अधिनियम की धारा 7 में, 1 जुलाई, 2017 से, -

धारा 7 का संशोधन.

(क) उप-धारा (1) में, -

(एक) खंड (ख) में, शब्द एवं चिन्ह "या उसे अग्रसर करने के लिए हो या नहीं;" के पश्चात्, शब्द "और" अंतःस्थापित किया जाये तथा सदैव अंतःस्थापित किया गया समझा जाये;

(दो) खंड (ग) में, शब्द "क्रियाकलाप " के पश्चात्, शब्द "और" का लोप किया जाये और सदैव लोप किया गया समझा जाये;

(तीन) खंड (घ) का लोप किया जाये और सदैव लोप किया गया समझा जाये ।

(ख) उप-धारा (1) के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाये और सदैव अंतःस्थापित किया गया समझा जाये, अर्थात् :-

"(1क) जहां कतिपय कार्यकलाप या संव्यवहार, उप-धारा (1) के उपबंधों के अनुसार कोई प्रदाय है, उन्हें अनुसूची 2 में यथा निर्दिष्ट माल का प्रदाय या सेवा का प्रदाय माना जाएगा।"

(ग) उप-धारा (3) में, शब्द, कोष्ठक एवं अंक "उपधारा (1) और उपधारा (2)" के स्थान पर, शब्द, कोष्ठक, अंक एवं अक्षर "उप-धारा (1), (1क) और (2)" प्रतिस्थापित किया जाये ।

4.

मूल अधिनियम की धारा 9 में, उप-धारा (4) के स्थान पर, धारा 9 का संशोधन.  
निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाये, अर्थात् :-

"(4) सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के एक वर्ग को विनिर्दिष्ट कर सकेगी, जो किसी अरजिस्ट्रीकृत प्रदायकर्ता से प्राप्त माल या सेवाओं या दोनों के विनिर्दिष्ट प्रवर्गों के प्रदाय के संबंध में, माल या सेवा या दोनों के ऐसे प्रदाय के प्राप्तिकर्ता के रूप में विपरीत प्रभार के आधार पर कर का संदाय करेंगे तथा इस अधिनियम के सभी उपबंध ऐसे प्राप्तिकर्ता को लागू होंगे, मानो वह माल या सेवा या दोनों के ऐसे प्रदाय के संबंध में कर का संदाय करने के लिए दायी व्यक्ति है।"

## धारा 10 का संशोधन. 5.

मूल अधिनियम की धारा 10 में, -

(क) उप-धारा (1) में, -

(एक) शब्द "उसके द्वारा संदेय कर के स्थान पर ऐसी दर पर" के स्थान पर, शब्द, कोष्ठक एवं अंक "धारा 9 की उप-धारा (1) के अधीन उसके द्वारा संदेय कर के बदले ऐसी दर पर" प्रतिस्थापित किया जाये;

(दो) परंतुक में, शब्द "एक करोड़ रूपए" के स्थान पर, शब्द "एक करोड़ पचास लाख रूपए" प्रतिस्थापित किया जाये;

(तीन) परंतुक में, पूर्ण विराम चिन्ह "।" के स्थान पर, कोलन चिन्ह ":" प्रतिस्थापित किया जाये;

(चार) परंतुक के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाये, अर्थात् :-

"परंतु यह और कि कोई व्यक्ति, जो खंड (क) या खंड (ख) या खंड (ग) के अधीन कर का संदाय करने का विकल्प लेता है, किसी राज्य में पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष में आवर्त के दस प्रतिशत से अनधिक मूल्य की सेवा (अनुसूची 2 के पैरा 6 के खंड (ख) में निर्दिष्ट से भिन्न) या पांच लाख रूपए, जो भी अधिक हो, का प्रदाय कर सकेगा।"

(ख) उप-धारा (2) में, खंड (क) के स्थान पर, निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाये, अर्थात् :-

"(क) उप-धारा (1) में यथा उपबंधित के सिवाय, वह सेवा की प्रदाय में नहीं लगा हुआ है;"

## धारा 12 का संशोधन. 6.

मूल अधिनियम की धारा 12 में, उप-धारा (2) में, खंड (क) में, शब्द, कोष्ठक एवं अंक "की उपधारा (1)" का लोप किया जाये।

## धारा 13 का संशोधन. 7.

मूल अधिनियम की धारा 13 में, उप-धारा (2) में, शब्द, कोष्ठक और अंक "की उपधारा (2)" जहां कहीं भी आया हो, का लोप किया जाये।

## धारा 16 का संशोधन. 8.

मूल अधिनियम की धारा 16 में, उप-धारा (2) में, -

(क) खंड (ख) में, स्पष्टीकरण के स्थान पर, निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाये, अर्थात् :-

"स्पष्टीकरण- इस खंड के प्रयोजनों के लिए, यह समझा जाएगा कि रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ने, यथास्थिति, माल या सेवा को प्राप्त किया है-

(एक) जहां माल का प्रदाय किसी प्रदायकर्ता द्वारा किसी प्राप्तिकर्ता या किसी अन्य व्यक्ति को ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के निर्देश पर किया गया है, चाहे वह अभिकर्ता के रूप में या अन्यथा, माल के संचलन से पूर्व या दौरान, माल के मालिकाना दस्तावेजों के अंतरण के माध्यम से या अन्यथा, कार्य कर रहा हो;



(दो) जहां सेवा का प्रदाय, प्रदायकर्ता द्वारा किसी व्यक्ति को ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के निर्देश पर और उसके मददे किया जाता है।"

(ख) खंड (ग) में, शब्द और अंक "धारा 41" के स्थान पर, शब्द, अंक और अक्षर "धारा 41 या धारा 43क" प्रतिस्थापित किया जाये।

9.

मूल अधिनियम की धारा 17 में, -

धारा 17 का संशोधन.

(क) उप-धारा (3) के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाये, अर्थात् :-

"स्पष्टीकरण- इस उप-धारा के प्रयोजनों के लिए, अभिव्यक्ति "छूट-प्राप्त प्रदाय का मूल्य" में अनुसूची 3 के पैरा 5 में विनिर्दिष्ट के सिवाय, उक्त अनुसूची में विनिर्दिष्ट कार्यकलापों या संव्यवहारों का मूल्य सम्मिलित नहीं होगा।"

(ख) उप-धारा (5) में, खंड (क) और (ख) के स्थान पर, निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाये, अर्थात्:-

"(क) व्यक्तियों के परिवहन के लिए मोटरयान, जो तेरह से अनधिक व्यक्तियों (चालक सहित) बैठने की क्षमता वाला हो, सिवाय तब, जब उनका उपयोग निम्नलिखित कराधेय प्रदाय करने के लिए किया जाता है, अर्थात् :-

- (अ) ऐसे मोटरयान का आगे और प्रदाय; या
- (आ) यात्रियों का परिवहन; या
- (इ) ऐसे मोटरयान को चलाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना;

(कक) जलयान और वायुयान, सिवाय तब जब उनका उपयोग-

(एक) निम्नलिखित कराधेय प्रदाय करने के लिए किया जाता है, अर्थात्:-

- (अ) ऐसे जलयान और वायुयान का आगे और प्रदाय; या
- (आ) यात्रियों का परिवहन; या
- (इ) ऐसे जलयान चलाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना; या
- (ई) ऐसे वायुयान चलाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना;

(दो) माल के परिवहन के लिए किया जाता है ;

(कख) साधारण बीमा, मोटरयानों की सर्विसिंग, मरम्मत और अनुरक्षण की सेवाएं, जहां उनका संबंध, खंड (क) या खंड (कक) में निर्दिष्ट मोटरयान, जलयान या

वायुयान से है:

परंतु ऐसी सेवाओं के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय उपलब्ध होगा—

(एक) जहां खंड (क) या खंड (कक) में निर्दिष्ट मोटरयान, जलयान या वायुयान का उपयोग, उसमें विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए किया जाता है;

(दो) जहां किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा प्राप्त किया जाता है, जो —

(अ) ऐसे मोटरयान, जलयान या वायुयान के विनिर्माण में लगा हुआ है; या

(आ) उसके द्वारा बीमाकृत ऐसे मोटरयान, जलयान या वायुयान के संबंध में साधारण बीमा सेवाओं के प्रदाय में लगा हुआ है;

(ख) माल या सेवा या दोनों का निम्नलिखित प्रदाय—

(एक) खाद्य और सुपेय, आउटडोर कैटरिंग, सौंदर्य उपचार, स्वास्थ्य सेवाएं, कार्मेटिक और प्लास्टिक शल्यक्रिया, खंड (क) या खंड (कक) में निर्दिष्ट मोटरयान, जलयान या वायुयान को पट्टे पर लेने या किराये पर लेने, सिवाय तब जब उनका उपयोग उनमें विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए किया जाता है, जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा :

परंतु ऐसे माल या सेवा या दोनों के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय उपलब्ध होगा जब ऐसे माल या सेवा या दोनों की आवश्यक प्रदाय का उपयोग किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा उसी प्रवर्ग के माल या सेवा या दोनों की जावक कराधेय प्रदाय के लिए या कराधेय समिश्र या मिश्रित प्रदाय के एक तत्व के रूप में किया जाता है;

(दो) ऐसे क्लब, स्वास्थ्य और फिटनेस केंद्र की सदस्यता; और

(तीन) अवकाश या गृह यात्रा रियायत, जैसे अवकाश पर कर्मचारियों को विस्तारित यात्रा लाभ :

परंतु ऐसे माल या सेवा या दोनों के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय उपलब्ध होगा, जहां किसी नियोक्ता के लिए अपने कर्मचारियों को तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन उपबंध करना बाध्यकर हो।”

और 92क" प्रतिस्थापित किया जाये।

11.

मूल अधिनियम की धारा 22 में, —

धारा 22 का संशोधन.

(क) उप-धारा (1) में, परंतुक के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :-

“परंतु यह और कि जहां ऐसा व्यक्ति, विशेष प्रवर्ग के किसी राज्य से, जिसके संबंध में केन्द्र सरकार ने इस परंतुक में निर्दिष्ट समग्र आवर्त को बढ़ाया हो, माल या सेवा या दोनों का कराधेय प्रदाय करता है, वह रजिस्ट्रीकृत किये जाने का दायी होगा यदि वित्तीय वर्ष में उसका समग्र आवर्त, ऐसे बढ़ाई गई आवर्त की समतुल्य राशि से अधिक हो।”

(ख) स्पष्टीकरण में, खंड (iii) में, शब्द “राज्य” के पश्चात् शब्द “जम्मू-कश्मीर राज्य को छोड़कर और अरुणाचल प्रदेश, असम, हिमाचल प्रदेश, मेघालय, सिक्किम और उत्तराखंड राज्य” अंतःस्थापित किया जाये।

12.

मूल अधिनियम की धारा 24 में, खंड (X) में, शब्द “वाणिज्य आपरेटर” के पश्चात्, शब्द एवं अंक “जिससे धारा 52 के अधीन कर का संग्रहण करने की अपेक्षा है” अंतःस्थापित किया जाये।

धारा 24 का संशोधन.

13.

मूल अधिनियम की धारा 25 में, —

धारा 25 का संशोधन.

(क) उप-धारा (1) में, परंतुक में, पूर्ण विराम चिन्ह “।” के स्थान पर, कोलन चिन्ह “:” प्रतिस्थापित किया जाये;

(ख) उप-धारा (1) में, परंतुक के पश्चात् और स्पष्टीकरण के पूर्व, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाये, अर्थात् :-

“परंतु यह और कि किसी ऐसे व्यक्ति को, जिसके पास किसी विशेष आर्थिक जोन में विशेष आर्थिक जोन अधिनियम, 2005 में यथा परिभाषित कोई यूनिट है या जो विशेष आर्थिक जोन विकासकर्ता है, ऐसे किसी पृथक रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन करना होगा, जो कि उसी राज्य में विशेष आर्थिक जोन के बाहर अवस्थित उसके कारबार के स्थान से सुभिन्न है।”

(ग) उप-धारा (2) में, परंतुक के स्थान पर निम्नलिखित प्रतिस्थापित गया जाये, अर्थात् :-

“परंतु ऐसे किसी व्यक्ति को, जिसके पास किसी राज्य में कारबार के बहु स्थान हैं, विहित की जाने वाली शर्तों के अध्यधीन रहते हुए, कारबार के ऐसे प्रत्येक स्थान के लिए पृथक रजिस्ट्रीकरण मंजूर किया जा सकेगा।”

14.

मूल अधिनियम की धारा 29 में, —

धारा 29 का संशोधन.

(क) पार्श्व शीर्ष में, शब्द “रद्दकरण” के पश्चात्, शब्द “या निलंबन” अंतःस्थापित किया जाये;

(ख) उप-धारा (1) में, खंड (ग) में, पूर्ण विराम चिन्ह “।” के स्थान पर, कोलन चिन्ह “:” प्रतिस्थापित किया जाये;

(ग) उप-धारा (1) में, खंड (ग) के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:-

“परंतु रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा रजिस्ट्रीकरण के रद्दकरण के संबंध में फाईल की गई कार्यवाहियों के लंबित रहने के दौरान, रजिस्ट्रीकरण को ऐसी अवधि के लिए और ऐसी रीति में, जैसा कि विहित की जाए, निलंबित किया जा सकेगा।”

(घ) उप-धारा (2) में, परंतुक में, पूर्ण विराम चिन्ह “।” के स्थान पर, कोलन चिन्ह “:” प्रतिस्थापित किया जाये;

(ड.) उप-धारा (2) में, परंतुक के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाये, अर्थात् :-

“परंतु यह और कि रजिस्ट्रीकरण के रद्दकरण से संबंधित कार्यवाहियों के लंबित रहने के दौरान, समुचित अधिकारी, रजिस्ट्रीकरण को ऐसी अवधि के लिए और ऐसी रीति में, जैसा कि विहित की जाए, निलंबित कर सकेगा।”

धारा 34 का संशोधन.

15.

मूल अधिनियम की धारा 34 में,-

(क) उप-धारा (1) में, -

(एक) शब्द “कोई कर बीजक जारी किया गया है” के स्थान पर, शब्द “एक या अधिक कर बीजक जारी किए गए हैं” प्रतिस्थापित किया जाये;

(दो) शब्द “जमापत्र जारी” के स्थान पर, शब्द “किसी वित्तीय वर्ष में किए गए प्रदायों के लिए एक या अधिक जमा पत्र जारी” प्रतिस्थापित किया जाये ।

(ख) उप-धारा (3) में, -

(एक) शब्द “कोई कर बीजक जारी किया गया है” के स्थान पर, शब्द “एक या अधिक कर बीजक जारी किए गए हैं” प्रतिस्थापित किया जाये;

(दो) शब्द “नामे पत्र जारी” के स्थान पर, शब्द “किसी वित्तीय वर्ष में किए गए प्रदायों के लिए एक या अधिक नामे पत्र जारी” प्रतिस्थापित किया जाये ।

16.

मूल अधिनियम की धारा 35 में,—

धारा 35 का संशोधन.

- (क) उप-धारा (5) में, पूर्ण विराम चिन्ह “।” के स्थान पर, कोलन चिन्ह “:” प्रतिस्थापित किया जाये;
- (ख) उप-धारा (5) के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:—

“परंतु इस उप-धारा में अंतर्विष्ट कोई बात, केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार के किसी विभाग या किसी ऐसे स्थानीय प्राधिकारी को लागू नहीं होगी, जिसकी लेखाबहियां, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक या तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन किसी स्थानीय प्राधिकारी के लेखाओं की संपरीक्षा के लिए नियुक्त किसी लेखापरीक्षक द्वारा संपरीक्षा किए जाने के अध्यधीन है।”

17.

मूल अधिनियम की धारा 39 में,—

धारा 39 का संशोधन.

- (क) उप-धारा (1) में,—

(एक) शब्द “ऐसे प्ररूप और रीति में, जो विहित की जाए” के स्थान पर, शब्द “ऐसे प्ररूप और रीति में तथा ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए” प्रतिस्थापित किया जाये;

(दो) शब्द “ऐसे कलेंडर मास या उसके किसी भाग के उत्तरवर्ती मास के बीसवें दिन को या उससे पूर्व” का लोप किया जाये;

- (ख) उप-धारा (1) में, पूर्ण विराम चिन्ह “।” के स्थान पर, कोलन चिन्ह “:” प्रतिस्थापित किया जाये;

- (ग) उप-धारा (1) के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाये, अर्थात्:—

“परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के कतिपय ऐसे वर्गों को अधिसूचित कर सकेगी, जो ऐसी शर्तों और सुरक्षा उपायों, जो उसमें विनिर्दिष्ट किए जाएं, के अध्यधीन रहते हुए, प्रत्येक तिमाही या उसके भाग के लिए विवरणी प्रस्तुत करेंगे।”

- (घ) उप-धारा (7) में, पूर्ण विराम चिन्ह “।” के स्थान पर, कोलन चिन्ह “:” प्रतिस्थापित किया जाये;

- (ङ) उप-धारा (7) के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाये, अर्थात्:—

“परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के कतिपय ऐसे वर्गों को अधिसूचित कर सकेगी, जो ऐसी शर्तों और सुरक्षा उपायों, जो उसमें विनिर्दिष्ट किए जाएं, के अध्यधीन रहते हुए, ऐसे विवरणी के अनुसार, ऐसी विवरणी को प्रस्तुत करने के लिए उससे अपेक्षित अंतिम तारीख को या उससे पूर्व सरकार को, शोध कर या उसके किसी भाग का संदाय करेंगे।”

(च) उप-धारा (9) में, -

(एक) शब्द "उस मास या तिमाही जिसके दौरान ऐसा लोप या अशुद्ध विशिष्टियां ध्यान में आई हैं दी जाने वाली विवरणी में" के स्थान पर, शब्द "ऐसे प्ररूप और रीति में, जैसा कि विहित की जाए" प्रतिस्थापित किया जाये;

(दो) परंतुक में, शब्द "वित्तीय वर्ष की समाप्ति" के स्थान पर, शब्द "ऐसे वित्तीय वर्ष, जिससे ऐसे ब्यौरे संबंधित हैं, की समाप्ति" प्रतिस्थापित किया जाये।

नवीन धारा 43क का जोड़ा 18.  
जाना.

मूल अधिनियम की धारा 43 के पश्चात्, निम्नलिखित जोड़ा जाये,  
अर्थात् :-

- "43क. विवरणी प्रस्तुत करने और इनपुट कर प्रत्यय लेने के लिए प्रक्रिया.—(1) धारा 16 की उप-धारा (2), धारा 37 या धारा 38 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, धारा 39 की उप-धारा (1) के अधीन प्रस्तुत विवरणियों में, प्रदायकर्ताओं द्वारा किए गए प्रदायों के ब्यौरे का सत्यापन, विधिमान्यकरण, उसमें उपांतरण करेगा या उन्हें हटाएगा।
- (2) धारा 41, धारा 42 या धारा 43 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, प्राप्तिकर्ता द्वारा इनपुट कर प्रत्यय लेने की प्रक्रिया और उसका सत्यापन उसी प्रकार किया जाएगा, जैसा कि विहित किया जाए।
- (3) प्राप्तिकर्ता द्वारा इनपुट कर प्रत्यय लेने के प्रयोजनों के लिए, कॉमन पोर्टल पर प्रदायकर्ता द्वारा जावक प्रदायों के ब्यौरे प्रस्तुत करने की प्रक्रिया वही होगी, जैसा कि विहित किया जाए।
- (4) उप-धारा (3) के अधीन प्रस्तुत न किये गये जावक प्रदायों के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय लेने की प्रक्रिया वही होगी, जैसा कि विहित किया जाए और ऐसी प्रक्रिया में इनपुट कर प्रत्यय की ऐसी अधिकतम रकम सम्मिलित हो सकेगी, जिसे इस प्रकार लिया जा सकता है, जो उक्त उप-धारा के अधीन प्रदायकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत ब्यौरे के आधार पर उपलब्ध इनपुट कर प्रत्यय के बीस प्रतिशत से अधिक नहीं होगी।
- (5) ऐसे जावक प्रदायों, जिसके लिए प्रदायकर्ता द्वारा उप-धारा (3) के अधीन ब्यौरे को प्रस्तुत किया गया है, में विनिर्दिष्ट कर की रकम को, अधिनियम के उपबंधों के अधीन उसके द्वारा संदेय कर के रूप में माना जाएगा।
- (6) किसी प्रदाय का प्रदायकर्ता और प्राप्तिकर्ता, संयुक्ततः और पृथकतः, जावक प्रदायों के संबंध में लिए गए, यथास्थिति इनपुट कर प्रत्यय का संदाय या कर का संदाय करने के लिए दायी होंगे, जिनके ब्यौरे उप-धारा (3) या उप-धारा (4) के अधीन प्रस्तुत किए गए हैं, किन्तु उसकी विवरणी प्रस्तुत नहीं की गई है।
- (7) उप-धारा (6) के प्रयोजनों के लिए, वसूली ऐसी रीति में की जाएगी, जैसा कि विहित की जाए और ऐसी प्रक्रिया में गलती से प्राप्त की गई एक हजार रुपए से अनधिक कर या इनपुट कर प्रत्यय की रकम की वसूली न करने के

लिए उपबंध हो सकेगा।

- (8) ऐसे जावक प्रदायों, जिनके ब्यौरे उप-धारा (3) के अधीन किसी ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा निम्नलिखित अवधि में प्रस्तुत किए जा सकते हैं, के संबंध में प्रक्रिया, सुरक्षा उपाय और कर की रकम की अवसीमा,—

(एक) रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करने के छः मास के भीतर;

(दो) जिसने कर के संदाय में व्यतिक्रम किया हो और जहां ऐसा व्यतिक्रम, व्यतिक्रम की रकम के संदाय की अंतिम तारीख से दो मास से अधिक की अवधि के लिए जारी रहता है,

वही होगी जैसा कि विहित की जाए।”

19. मूल अधिनियम की धारा 48 में, उप-धारा (2) में, शब्द ‘प्रस्तुत करने के लिए’ के पश्चात्, शब्द “और ऐसे अन्य कार्य करने के लिए” अंतःस्थापित किया जाये। **धारा 48 का संशोधन.**

20. मूल अधिनियम की धारा 49 में, — **धारा 49 का संशोधन.**

(क) उप-धारा (2) में, शब्द और अंक “धारा 41” के स्थान पर, शब्द, अंक और अक्षर “धारा 41 या धारा 43क” प्रतिस्थापित किया जाये;

(ख) उप-धारा (5) में,—

(एक) खंड (ग) में, अर्द्ध विराम चिन्ह “;” के स्थान पर, कोलन चिन्ह “:” प्रतिस्थापित किया जाये;

(दो) खंड (ग) के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाये, अर्थात्:—

“परंतु राज्य कर के मददे इनपुट कर प्रत्यय का उपयोग एकीकृत कर के संदाय के लिए केवल वहां किया जाएगा, जहां केन्द्रीय कर के मददे इनपुट कर प्रत्यय का अतिशेष एकीकृत कर के संदाय के लिए उपलब्ध नहीं है;”

(तीन) खंड (घ) में, अर्द्ध विराम चिन्ह “;” के स्थान पर, कोलन चिन्ह “:” प्रतिस्थापित किया जाये;

(चार) खंड (घ) के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाये, अर्थात्:—

“परंतु संघ राज्यक्षेत्र कर के मददे इनपुट कर प्रत्यय का उपयोग एकीकृत कर के संदाय के लिए केवल वहां किया जाएगा, जहां केन्द्रीय कर के मददे इनपुट कर प्रत्यय का अतिशेष एकीकृत कर के संदाय के लिए उपलब्ध नहीं है;”

21. मूल अधिनियम की धारा 49 के पश्चात्, निम्नलिखित जोड़ा जाये, **नवीन धारा 49क और 49ख का जोड़ा जाना.**  
अर्थात् :—

“49क. धारा 49 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, राज्य कर के मददे इनपुट कर प्रत्यय का उपयोग, यथास्थिति, एकीकृत कर या राज्य कर के संदाय के लिये केवल तब

किया जाएगा, जब एकीकृत कर के मददे उपलब्ध इनपुट कर प्रत्यय का पहले ही ऐसे संदाय के प्रति पूर्णतया उपयोग कर लिया गया है।

49ख. इस अध्याय में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी और धारा 49 की उप-धारा (5) के खंड (ड) और खंड (च) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, सरकार, परिषद् की सिफारिशों से, यथास्थिति, एकीकृत कर, केन्द्रीय कर, राज्य कर या संघ राज्यक्षेत्र कर के मददे इनपुट कर प्रत्यय का, ऐसे कर के संदाय के मददे उपयोग किए जाने के आदेश और रीति को विहित कर सकेगी।”

धारा 52 का संशोधन. 22. मूल अधिनियम की धारा 52 में, उप-धारा (9) में, शब्द और अंक “धारा 37” के स्थान पर, शब्द और अंक “धारा 37 या धारा 39” प्रतिस्थापित किया जाये।

धारा 54 का संशोधन. 23. मूल अधिनियम की धारा 54 में, —  
(क) उप-धारा (8) में, खंड (क) में, शब्द “शून्य अंकित” और “शून्य अंकित प्रदायों” के स्थान पर, क्रमशः शब्द “निर्यात” और “निर्यातों” प्रतिस्थापित किया जाये।

(ख) स्पष्टीकरण में, खंड (2) में, —  
(एक) उप-खंड (ग) में, मद (एक) में, शब्द “विदेशी मुद्रा में” के पश्चात्, शब्द “या भारतीय रुपये में, जहां कही भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अनुज्ञप्त हो,” अंतःस्थापित किया जाये;  
(दो) उप-खंड (ड) के स्थान पर, निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाये, अर्थात्:—

“(ड) उप-धारा (3) के प्रथम परंतुक के खंड (ii) के अधीन उपयोग न किए गए इनपुट कर प्रत्यय के प्रतिदाय की दशा में, उस अवधि के लिए, जिसमें प्रतिदाय के लिए ऐसा दावा उत्पन्न होता है, धारा 39 के अधीन विवरणी प्रस्तुत करने की अंतिम तारीख;”

धारा 79 का संशोधन. 24. मूल अधिनियम की धारा 79 में, उप-धारा (4) के पश्चात्, निम्नलिखित जोड़ा जाये, अर्थात्:—

“स्पष्टीकरण— इस धारा के प्रयोजनों के लिए, शब्द ‘व्यक्ति’ में, यथास्थिति, धारा 25 की उप-धारा (4) या उप-धारा (5) में यथा निर्दिष्ट “सुभिन्न व्यक्ति” सम्मिलित होंगे।”

धारा 107 का संशोधन. 25. मूल अधिनियम की धारा 107 में, उप-धारा (6) में, खंड (ख) में, शब्द “बराबर राशि” के पश्चात्, शब्द “अधिकतम पच्चीस करोड़ रुपये के अधीन रहते हुए” अंतःस्थापित किया जाये।

धारा 112 का संशोधन. 26. मूल अधिनियम की धारा 112 में, उप-धारा (8) में, खंड (ख) में, शब्द “बराबर राशि,” के पश्चात्, शब्द “अधिकतम पचास करोड़ रुपये के अधीन रहते हुए,” अंतःस्थापित किया जाये।



27. मूल अधिनियम की धारा 129 में, उप-धारा (6) में, शब्द "सात दिन" जहां कहीं भी आया हो के स्थान पर, शब्द "चौदह दिन" प्रतिस्थापित किया जाये। धारा 129 का संशोधन.
28. मूल अधिनियम की धारा 143 में, उप-धारा (1) में, खंड (ख) में,— धारा 143 का संशोधन.  
(एक) परंतुक में, प्रविष्टि (ii) में, पूर्ण विराम चिन्ह "।" के स्थान पर, कोलन चिन्ह ":" प्रतिस्थापित किया जाये; और  
(दो) प्रथम परंतुक के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाये, अर्थात्:—  
"परंतु यह और कि पर्याप्त हेतुक दर्शित किए जाने पर, एक वर्ष और तीन वर्ष की अवधि को, आयुक्त द्वारा क्रमशः एक वर्ष और दो वर्ष से अनधिक अग्रतर अवधि के लिए बढ़ाया जा सकेगा।"
29. मूल अधिनियम की अनुसूची 1 में, पैरा 4 में, शब्द "कराधेय व्यक्ति" के स्थान पर, शब्द "व्यक्ति" प्रतिस्थापित किया जाये। अनुसूची 1 का संशोधन.
30. मूल अधिनियम की अनुसूची 2 में, शीर्षक में, शब्द "क्रियाकलापों" के पश्चात्, शब्द "या संव्यवहारों" अंतःस्थापित किया जाये और 1 जुलाई, 2017 से सदैव अंतःस्थापित किया गया समझा जाये। अनुसूची 2 का संशोधन.
31. मूल अधिनियम की अनुसूची 3 में,— अनुसूची 3 का संशोधन.  
(एक) पैरा 6 के पश्चात्, निम्नलिखित अंतःस्थापित किया जाये, अर्थात्:—  
'7. भारत के बाहर किसी स्थान से, भारत के बाहर किसी अन्य स्थान पर माल का, ऐसे माल को भारत में प्रवेश किए बिना, प्रदाय।  
8. (क) घरेलू उपभोग के लिए अनुमति प्रदान किए जाने से पूर्व किसी व्यक्ति को भांडागार में रखे गए माल का प्रदाय;  
(ख) परेषिती द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को, माल का, भारत से बाहर अवस्थित मूल पत्तन से प्रेषण किए जाने के पश्चात्, किंतु घरेलू उपभोग के लिए अनुमति दिए जाने से पूर्व, माल के मालिकाना हक के दस्तावेज में पृष्ठांकन द्वारा, प्रदाय।"  
(दो) स्पष्टीकरण के स्थान पर, निम्नलिखित प्रतिस्थापित किया जाये, अर्थात्:—  
"स्पष्टीकरण 1— पैरा 2 के प्रयोजन के लिये, शब्द "न्यायालय" जिसके अंतर्गत जिला न्यायालय, उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय भी सम्मिलित है।  
स्पष्टीकरण 2— पैरा 8 के प्रयोजनों के लिए, शब्द "भांडागार में रखे गए माल" का वही अर्थ होगा, जो सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 में उसके लिये समनुदेशित है।"

अटल नगर, दिनांक 5 अक्टूबर 2018

क्रमांक 9855/डी. 184/21-अ/प्रारू./छ. ग./18.— भारत के संविधान के अनुच्छेद 348 के खण्ड (3) के अनुसरण में इस विभाग की समसंख्यक अधिसूचना दिनांक 05-10-2018 का अंग्रेजी अनुवाद राज्यपाल के प्राधिकार से एतद्वारा प्रकाशित किया जाता है.

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के नाम से तथा आदेशानुसार,  
टी. सी. त्रिपाठी, उप-सचिव.

CHHATTISGARH ACT  
(No. 25 of 2018)

**THE CHHATTISGARH GOODS AND SERVICES TAX (AMENDMENT) ACT, 2018.**

**An Act to amend the Chhattisgarh Goods and Services Tax Act, 2017  
(No. 7 of 2017).**

Be it enacted by the Chhattisgarh Legislature in the Sixty- ninth Year of the Republic of India, as follows:-

**Short title and  
commencement.**

1. (1) This Act may be called the Chhattisgarh Goods and Services Tax (Amendment) Act, 2018.
- (2) Save as otherwise provided, the provisions of this Act shall come into force on such date as the State Government may, by notification in the Official Gazette, appoint:

Provided that different dates may be appointed for different provisions of this Act and any reference in any such provision to the commencement of this Act shall be construed as a reference to the coming into force of that provision.

**Amendment of Section 2.**

2. In Section 2 of the Chhattisgarh Goods and Services Tax Act, 2017 (No. 7 of 2017), (hereinafter referred to as the Principal Act),—
  - (a) in clause (4), for the words “the Appellate Authority and the Appellate Tribunal”, the words, brackets and figures “the Appellate Authority, the Appellate Tribunal and the Authority referred to in sub-section (2) of Section 171” shall be substituted;
  - (b) in clause (16) for the words “Central Board of Excise and Customs” the words “Central Board of Indirect Taxes and Customs” shall be substituted;
  - (c) in clause (17), for sub-clause (h), the following shall be substituted, namely:—
 

“(h) activities of a race club including by way of totalisator or a license to book maker or activities of a licensed book maker in such club; and”
  - (d) clause (18) shall be omitted;
  - (e) in clause (35), for the word, brackets and letter “clause (c)”, the word, brackets and letter “clause (b)” shall be substituted;
  - (f) in clause (69), in sub-clause (f), after the word and figures “Article 371”, the words, figures and letter “and Article 371J” shall be inserted;
  - (g) after clause (102), the following shall be inserted, namely:—
 

**“Explanation.**—For the removal of doubts, it is hereby clarified that the expression “services” includes facilitating or arranging transactions in securities;”

3. In Section 7 of the Principal Act, with effect from the 1st day of July, 2017,—
- Amendment of Section 7.**
- (a) in sub-section (1), —
- (i) in clause (b), after the words and symbol “or furtherance of business;”, the word “and” shall be inserted and shall always be deemed to have been inserted;
  - (ii) in clause (c), after the words “a consideration”, the word “and” shall be omitted and shall always be deemed to have been omitted;
  - (iii) clause (d) shall be omitted and shall always be deemed to have been omitted.
- (b) after sub-section (1), the following shall be inserted and shall always be deemed to have been inserted, namely:—
- “(1A) where certain activities or transactions constitute a supply in accordance with the provisions of sub-section (1), they shall be treated either as supply of goods or supply of services as referred to in Schedule II.”
- (c) in sub-section (3), for the words, brackets and figures “sub-sections (1) and (2)”, the words, brackets, figures and letter “sub-sections (1), (1A) and (2)” shall be substituted.
4. In Section 9 of the Principal Act, for sub-section (4), the following shall be substituted, namely:—
- Amendment of Section 9.**
- “(4) The Government may, on the recommendations of the Council, by notification, specify a class of registered persons who shall, in respect of supply of specified categories of goods or services or both received from an unregistered supplier, pay the tax on reverse charge basis as the recipient of such supply of goods or services or both, and all the provisions of this Act shall apply to such recipient as if he is the person liable for paying the tax in relation to such supply of goods or services or both.”
5. In Section 10 of the Principal Act,—
- Amendment of Section 10.**
- (a) in sub-section (1) —
- (i) for the words “in lieu of the tax payable by him, an amount calculated at such rate”, the words, brackets and figures “in lieu of the tax payable by him under sub-section (1) of Section 9, an amount of tax calculated at such rate” shall be substituted;
  - (ii) in the proviso, for the words “one crore rupees”, the words “one crore and fifty lakh rupees” shall be substituted;
  - (iii) in the proviso, for the punctuation full stop “.”, the punctuation colon “:” shall be substituted;
  - (iv) after the proviso, the following shall be inserted, namely:—
- “Provided further that a person who opts to pay tax under clause (a) or clause (b) or clause (c) may supply services (other than those referred to in clause (b) of paragraph 6 of Schedule II), of value not exceeding ten per cent of turnover in the State in the preceding financial year or five lakh rupees, whichever is higher.”
- (b) in sub-section (2), for clause (a), the following shall be substituted, namely:—
- “(a) save as provided in sub-section (1), he is not engaged in the supply of services;”

- Amendment of Section 12.** 6. In Section 12 of the Principal Act, in sub-section (2), in clause (a), the words, brackets and figure "sub-section (1) of" shall be omitted.
- Amendment of Section 13.** 7. In Section 13 of the Principal Act, in sub-section (2), the words, brackets and figure "sub-section (2) of" wherever they occur, shall be omitted.
- Amendment of Section 16.** 8. In Section 16 of the Principal Act, in sub-section (2),—
- (a) in clause (b), for the Explanation, the following shall be substituted, namely:—
- "Explanation.**—For the purposes of this clause, it shall be deemed that the registered person has received the goods or, as the case may be, services—
- (i) where the goods are delivered by the supplier to a recipient or any other person on the direction of such registered person, whether acting as an agent or otherwise, before or during movement of goods, either by way of transfer of documents of title to goods or otherwise;
- (ii) where the services are provided by the supplier to any person on the direction of and on account of such registered person."
- (b) in clause (c), for the word and figures "Section 41", the words, figures and letter "Section 41 or Section 43A" shall be substituted.
- Amendment of Section 17.** 9. In Section 17 of the Principal Act,—
- (a) after sub-section (3), the following shall be inserted, namely:—
- "Explanation.**—For the purposes of this sub-section, the expression "value of exempt supply" shall not include the value of activities or transactions specified in Schedule III, except those specified in paragraph 5 of the said Schedule."
- (b) in sub-section (5), for clauses (a) and (b), the following shall be substituted, namely:—
- "(a) motor vehicles for transportation of persons having approved seating capacity of not more than thirteen persons (including the driver), except when they are used for making the following taxable supplies, namely:—
- (A) further supply of such motor vehicles; or
- (B) transportation of passengers; or
- (C) imparting training on driving such motor vehicles;
- (aa) vessels and aircraft except when they are used—
- (i) for making the following taxable supplies, namely:—
- (A) further supply of such vessels or aircraft; or
- (B) transportation of passengers; or
- (C) imparting training on navigating such vessels;
- or
- (D) imparting training on flying such aircraft;
- (ii) for transportation of goods;
- (ab) services of general insurance, servicing, repair and maintenance in so far as they relate to motor vehicles, vessels or aircraft referred to in clause (a) or clause (aa):
- Provided that the input tax credit in respect of such services shall be available—

- (i) where the motor vehicles, vessels or aircraft referred to in clause (a) or clause (aa) are used for the purposes specified therein;
- (ii) where received by a taxable person engaged—
  - (A) in the manufacture of such motor vehicles, vessels or aircraft; or
  - (B) in the supply of general insurance services in respect of such motor vehicles, vessels or aircraft insured by him;
- (b) the following supply of goods or services or both—
  - (i) food and beverages, outdoor catering, beauty treatment, health services, cosmetic and plastic surgery, leasing, renting or hiring of motor vehicles, vessels or aircraft referred to in clause (a) or clause (aa) except when used for the purposes specified therein, life insurance and health insurance:

Provided that the input tax credit in respect of such goods or services or both shall be available where an inward supply of such goods or services or both is used by a registered person for making an outward taxable supply of the same category of goods or services or both or as an element of a taxable composite or mixed supply;

- (ii) membership of a club, health and fitness centre; and
- (iii) travel benefits extended to employees on vacation such as leave or home travel concession:

Provided that the input tax credit in respect of such goods or services or both shall be available, where it is obligatory for an employer to provide the same to its employees under any law for the time being in force."

10. In Section 20 of the Principal Act, in Explanation, in clause (c), for the words and figures "under entry 84," the words, figures and letter "under entries 84 and 92A" shall be substituted. **Amendment of Section 20.**
11. In Section 22 of the Principal Act,—  
 (a) in sub-section (1), after the proviso, the following shall be inserted, namely:—  
 "Provided further that where such person makes taxable supplies of goods or services or both from a special category State in respect of which the Central Government has enhanced the aggregate turnover referred to in the first proviso, he shall be liable to be registered if his aggregate turnover in a financial year exceeds the amount equivalent to such enhanced turnover."  
 (b) in the Explanation, in clause (iii), after the words "Constitution" the words "except the State of Jammu and Kashmir", and States of Arunachal Pradesh, Assam, Himachal Pradesh, Meghalaya, Sikkim and Uttarakhand" shall be inserted. **Amendment of Section 22.**
12. In Section 24 of the Principal Act, in clause (x), after the words "commerce operator", the words and figures "who is required to collect tax at source under Section 52" shall be inserted. **Amendment of Section 24.**

**Amendment Section 25.**

13.

In Section 25 of the Principal Act,—

- (a) in sub-section (1), in the proviso, for the punctuation full stop ".", the punctuation colon ":" shall be substituted;
- (b) in sub-section (1), after the proviso and before the Explanation, the following shall be inserted, namely:—

"Provided further that a person having a unit, as defined in the Special Economic Zones Act, 2005, in a Special Economic Zone or being a Special Economic Zone developer shall have to apply for a separate registration, as distinct from his place of business located outside the Special Economic Zone in the same State."

- (c) in sub-section (2), for the proviso, the following shall be substituted, namely:—

"Provided that a person having multiple places of business in the State may be granted a separate registration for each such place of business, subject to such conditions as may be prescribed."

**Amendment of Section 29.**

14.

In Section 29 of the Principal Act,—

- (a) in the marginal heading after the word "Cancellation", the words "or suspension" shall be inserted;
- (b) in sub-section (1), in clause (c), for the punctuation full stop ".", the punctuation colon ":" shall be substituted;
- (c) in sub-section (1), after clause (c), the following shall be inserted, namely:—

"Provided that during pendency of the proceedings relating to cancellation of registration filed by the registered person, the registration may be suspended for such period and in such manner as may be prescribed."

- (d) in sub-section (2), in the proviso, for the punctuation full stop ".", the punctuation colon ":" shall be substituted;
- (e) in sub-section (2), after the proviso, the following shall be inserted, namely:—

"Provided further that during pendency of the proceedings relating to cancellation of registration, the proper officer may suspend the registration for such period and in such manner as may be prescribed."

**Amendment of Section 34.**

15.

In Section 34 of the Principal Act,—

- (a) in sub-section (1),—
  - (i) for the words "Where a tax invoice has", the words "Where one or more tax invoices have" shall be substituted;
  - (ii) for the words "a credit note", the words "one or more credit notes for supplies made in a financial year" shall be substituted.
- (b) in sub-section (3),—
  - (i) for the words "Where a tax invoice has", the words "Where one or more tax invoices have" shall be substituted;
  - (ii) for the words "a debit note", the words "one or more debit notes for supplies made in a financial year" shall be substituted.

16. In Section 35 of the Principal Act,- **Amendment of Section 35.**
- (a) in sub-section (5), for the punctuation full stop ".", the punctuation colon ":" shall be substituted;
  - (b) after sub-section (5), the following shall be inserted, namely:—  
 "Provided that nothing contained in this sub-section shall apply to any department of the Central Government or a State Government or a local authority, whose books of account are subject to audit by the Comptroller and Auditor-General of India or an auditor appointed for auditing the accounts of local authorities under any law for the time being in force."
17. In Section 39 of the Principal Act,— **Amendment of Section 39.**
- (a) in sub-section (1),—
    - (i) for the words "in such form and manner as may be, prescribed", the words "in such form, manner and within such time as may be prescribed" shall be substituted;
    - (ii) the words "on or before the twentieth day of the month succeeding such calendar month or part thereof" shall be omitted; and
  - (b) in sub-section (1), for the punctuation full stop ".", the punctuation colon ":" shall be substituted;
  - (c) after sub-section (1), the following shall be inserted, namely:—  
 "Provided that the Government may, on the recommendations of the Council, notify certain classes of registered persons who shall furnish return for every quarter or part thereof, subject to such conditions and safeguards as may be specified therein."
  - (d) in sub-section (7), for the punctuation full stop ".", the punctuation colon ":" shall be substituted;
  - (e) after sub-section (7), the following shall be inserted, namely:—  
 "Provided that the Government may, on the recommendations of the Council, notify certain classes of registered persons who shall pay to the Government the tax due or part thereof as per the return on or before the last date on which he is required to furnish such return, subject to such conditions and safeguards as may be specified therein.";
  - (f) in sub-section (9),—
    - (i) for the words "in the return to be furnished for the month or quarter during which such omission or incorrect particulars are noticed", the words "in such form and manner as may be prescribed" shall be substituted;
    - (ii) in the proviso, for the words "the end of the financial year", the words "the end of the financial year to which such details pertain" shall be substituted.
18. After Section 43 of the Principal Act, the following shall be added, **Addition of new Section 43A.**  
 namely:—
- "43A. Procedure for furnishing return and availing input tax credit.**
- (1) Notwithstanding anything contained in sub-section (2) of Section 16, Section 37 or Section 38, every registered person shall in the returns furnished under sub-section(1) of Section 39 verify, validate, modify or

- delete the details of supplies furnished by the suppliers.
- (2) Notwithstanding anything contained in Section 41, Section 42 or Section 43, the procedure for availing of input tax credit by the recipient and verification thereof shall be such as may be prescribed.
  - (3) The procedure for furnishing the details of outward supplies by the supplier on the common portal, for the purposes of availing input tax credit by the recipient shall be such as may be prescribed.
  - (4) The procedure for availing input tax credit in respect of outward supplies not furnished under sub-section (3) shall be such as may be prescribed and such procedure may include the maximum amount of the input tax credit which can be so availed, not exceeding twenty per cent. of the input tax credit available, on the basis of *details furnished by the suppliers under the said sub-section.*
  - (5) The amount of tax specified in the outward supplies for which the details have been furnished by the supplier under sub-section (3) shall be deemed to be the tax payable by him under the provisions of the Act.
  - (6) The supplier and the recipient of a supply shall be jointly and severally liable to pay tax or to pay the input tax credit availed, as the case may be, in relation to outward supplies for which the details have been furnished under sub-section (3) or sub-section (4) but return thereof has not been furnished.
  - (7) For the purposes of sub-section (6), the recovery shall be made in such manner as may be prescribed and such procedure may provide for non-recovery of an amount of tax or input tax credit wrongly availed not exceeding one thousand rupees.
  - (8) The procedure, safeguards and threshold of the tax amount in relation to outward supplies, the details of which can be furnished under sub-section (3) by a registered person,—
    - (i) within six months of taking registration;
    - (ii) who has defaulted in payment of tax and where such default has continued for more than two months from the due date of payment of such defaulted amount,
 shall be such as may be prescribed.”

**Amendment of Section 48.** 19.

In Section 48 of the Principal Act, in sub-section (2), after the word and figures “Section 45”, the words and punctuation “and to perform such other functions,” shall be inserted.

**Amendment of Section 49.** 20.

In Section 49 of the Principal Act,—

- (a) in sub-section (2), for the word and figures “Section 41”, the words, figures and letter “Section 41 or Section 43A” shall be substituted;
- (b) in sub-section (5),—
  - (i) in clause (c), for the punctuation semi colon “;”, the punctuation colon “:” shall be substituted;
  - (ii) after clause (c), the following shall be inserted, namely:—



“Provided that the input tax credit on account of State tax shall be utilised towards payment of integrated tax only where the balance of the input tax credit on account of central tax is not available for payment of integrated tax;”

- (iii) in clause (d), for the punctuation semi colon ";", the punctuation colon ":" shall be substituted;
- (iv) after clause (d), the following shall be inserted, namely:—

“Provided that the input tax credit on account of Union territory tax shall be utilised towards payment of integrated tax only where the balance of the input tax credit on account of central tax is not available for payment of integrated tax;”

- |     |   |   |
|-----|---|---|
| 21. | <p>After Section 49 of the Principal Act, the following shall be added, namely-</p> <p>“49A. Notwithstanding anything contained in Section 49, the input tax credit on account of State tax shall be utilised towards payment of integrated tax or State tax, as the case may be, only after the input tax credit available on account of integrated tax has first been utilised fully towards such payment.</p> <p>49B. Notwithstanding anything contained in this Chapter and subject to the provisions of clause (e) and clause (f) of sub-section (5) of Section 49, the Government may, on the recommendations of the Council, prescribe the order and manner of utilisation of the input tax credit on account of integrated tax, central tax, State tax or Union territory tax, as the case may be, towards payment of any such tax.”</p>                                | <p><b>Addition of new Sections<br/>49A and 49B.</b></p> |
| 22. | <p>In Section 52 of the Principal Act, in sub-section (9), for the word and figures “Section 37”, the words and figures “Section 37 or Section 39” shall be substituted.</p>  | <p><b>Amendment<br/>of Section 52.</b></p>              |
| 23. | <p>In Section 54 of the Principal Act,—</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>(a) in sub-section (8), in clause (a), for the words “zero-rated supplies” and “zero-rated supplies”, the word “export” and “exports” shall respectively be substituted;</li> <li>(b) in the Explanation, in clause (2),— <ul style="list-style-type: none"> <li>(i) in sub-clause (c), in item (i), after the words “foreign exchange”, the words “or in Indian rupees wherever permitted by the Reserve Bank of India” shall be inserted;</li> <li>(ii) for sub-clause (e), the following shall be substituted, namely:— <p>“(e) in the case of refund of unutilised input tax credit under clause (ii) of the first proviso to sub-section (3), the due date for furnishing of return under Section 39 for the period in which such claim for refund arises;”</p> </li> </ul> </li> </ul> | <p><b>Amendment<br/>of Section 54.</b></p>              |
| 24. | <p>In Section 79 of the Principal Act, after sub-section(4), the following shall be added, namely:—</p> <p><b>"Explanation.</b>—For the purposes of this Section, the word 'person' shall include “distinct persons” as referred to in sub-section (4) or, as</p>   | <p><b>Amendment<br/>of Section 79.</b></p>              |

		the case may be, sub-section (5) of Section 25."
<b>Amendment of Section 107.</b>	25.	In Section 107 of the Principal Act, in sub-section (6), in clause (b), after the words "arising from the said order," the words "subject to a maximum of twenty-five crore rupees," shall be inserted.
<b>Amendment of Section 112.</b>	26.	In Section 112 of the Principal Act, in sub-section (8), in clause (b), after the words "arising from the said order," the words "subject to a maximum of fifty crore rupees," shall be inserted.
<b>Amendment of Section 129.</b>	27.	In Section 129 of the Principal Act, in sub-section (6), for the words "seven days", wherever they occur the words "fourteen days" shall be substituted.
<b>Amendment of Section 143.</b>	28.	In Section 143 of the Principal Act, in sub-section (1), in clause (b), - (i) in the proviso, in entry (ii), for punctuation full stop ".", the punctuation colon ":" shall be substituted; and (ii) after first proviso, the following shall be inserted, namely:— "Provided further that the period of one year and three years may, on sufficient cause being shown, be extended by the Commissioner for a further period not exceeding one year and two years respectively."
<b>Amendment of Schedule I.</b>	29.	In Schedule I of the Principal Act, in paragraph 4, for the words "taxable person", the word "person" shall be substituted.
<b>Amendment of Schedule II.</b>	30.	In Schedule II of the Principal Act, in the heading, after the word "ACTIVITIES", the words "OR TRANSACTIONS" shall be inserted and shall always be deemed to have been inserted with effect from the 1st day of July, 2017.
<b>Amendment of Schedule III.</b>	31.	In Schedule III of the Principal Act, — (i) after paragraph 6, the following shall be inserted, namely:— "7. Supply of goods from a place outside India to another place outside India without such goods entering into India. 8. (a) Supply of warehoused goods to any person before clearance for home consumption; (b) Supply of goods by the consignee to any other person, by endorsement of documents of title to the goods, after the goods have been dispatched from the port of origin located outside India but before clearance for home consumption." (ii) for the Explanation, the following shall be substituted, namely:— "Explanation 1- For the purposes of paragraph 2, the term "court" includes District Court, High Court and Supreme Court. Explanation 2.—For the purposes of paragraph 8, the expression "warehoused goods" shall have the same meaning as assigned to it in the Customs Act, 1962."